अध्ययन सामग्री
बी॰ ए॰ पार्ट 2
प्रश्नपत्र -
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

31-07-20

# दशकुमारचरितम्

## अवन्तिसुन्दरी का सौन्दर्य वर्णन

संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रवीण तथा मूर्धन्य आचार्य महाकवि दण्डी अपनी प्रसिद्ध कृति 'दशकुमारचरितम्' के कारण लोकविश्रुत हैं। पदलालित्य से ओत-प्रोत इस काव्य में उपयुक्त स्थलों पर आवश्यकतानुसार समस्त रसों की वर्णना हुई है। विशेषतः वसुमती तथा अवन्तिसुन्दरी के सौन्दर्य वर्णन में इनकी लेखनी अपनी आभा से समस्त संस्कृत वाङ्मय को शृंगार रस से आप्लावित कर देती है।

दशकुमारचरित के पञ्चम उच्छ्वास में अवन्तिसुन्दरी के सौन्दर्य वर्णन प्रसंग में इन्होंने विशेष तौर पर उत्प्रेक्षा, रूपक तथा उपमा अलंकार का आश्रय लिया है। अवन्तिसुन्दरी राजवाहन के पिता राजहंस के सहज वैरी मानसार की पुत्री है। राजवाहन के साथ अवन्तिसुन्दरी का प्रणय जन्म-जन्मान्तर से चला आ रहा है। अवन्तिसुन्दरी एक राजकन्या के गुणों से तथा अनुरूप सौन्दर्य से विभूषित है। उसके अंग-अंग से भारुता का विलक्षण प्रवाह फूटता है। पञ्चम उच्छ्वास के प्रारम्भ में ही वसन्त वर्णन के पश्चात् अवन्तिसुन्दरी के सौन्दर्य वर्णन में कवि की प्रतिभा

सर्वतोभावेन संलग्न हो जाती है। वस्तुतः वसन्त वर्णन अवन्ति-सुन्दरी के लावण्य वर्णन की आधारभित्ति है। कामोत्सव मनाने के लिए विभिन्न पौरु सुन्दरियों के साथ विशेषरूपेण अपनी प्रिय वयस्या बालचन्द्रिका के साथ वह पुष्पोद्यान में आती है तथा एक नूतन रसाल वृक्ष के दायां तल में कामदेव की उपासना में संलग्न हो जाती है। इसी स्थल पर दण्डी की वाणी राजकन्या के लावण्योन्माद में निरत होती है। कवि की दृष्टि में अवन्तिसुन्दरी एक साधारण राजकन्या नहीं है अपितु अपनी प्रेयसी रति के मनोरंजनार्थ कामदेव के द्वारा विरचित एक जीवित गुड़िया है जिसे साक्षात् काम ने ही अपने विभिन्न उपकरणों से सजाया है। अवन्तिसुन्दरी के पैर मानों कामदेव के क्रीड़ा सरोवर के शारदीय कमलों के सौन्दर्य से रचित हैं तथा उसकी गति कामदेव के उपवन की बावली में स्वच्छन्द भाव से विचरण करने वाली मतवाली हंसिनी की विलासपूर्ण गति से निर्मित है। इस प्रसंग में कविवर दण्डी की निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

"या वसन्तसहायेन समुत्सुकतया रतेः केलीशालभंजिकाविधित्सया नारीविशेषं विरचयतः क्रीडाकासारशारदारविन्दसौन्दर्येण पाद-द्वयम्, उद्यानवनदीर्घिकामत्तमरालिकागमनरीत्या लीलालसगति-विलासम्।"

इतना ही नहीं कामदेव ने अपने तरकस के सौन्दर्य से इसकी दोनों जंघाएँ, क्रीडागृह के द्वार पर लगी कदली फल के लालित्य से दोनों सुन्दर घुटने तथा विजयशील रथ की निर्माण कला से सघन जघन स्थल की रचना की है। यथा —

"तूणीरलावण्येन जङ्घे लीलामन्दिरद्वारकदलीलालित्येन मनोज्ञमुरु युगम, जैत्ररथचातुर्येण घनं जघनम्।"

स्वयमेव कामदेव ने अधखिले श्वेत कमल

के कली के मध्य भाग के द्वारा गंगा भँवर के सदृश उसकी नाभि, प्रासाद पर चढ़ने के लिए सोपान सी त्रिवली, धनुष की प्रत्यञ्चा पर मँडराती मधुपमंडली की नीलिमा से उसकी रोमावली, पूर्ण सुवर्ण कलश के शोभा से कुचद्वय एवं लतामण्डप की सुकुमारता से उसकी दोनों भुजाओं की रचना की —

"किञ्चिद्विकसल्लीलावतंसकह्यारकोरककोटरानुवृत्तया गङ्गावर्तसनाभिः नाभिम्, सौधारोहणपरिपाट्या वलित्रयम्, मौर्वीमधुकरपङ्क्तिनीलिमलीलया रोमवलिम्, पूर्णसुवर्णकलशशोभया कुचद्वयम् लतामण्डप सौकुमार्येण बाहु"।

इसी तरह कामदेव ने जयशङ्ख की शोभा से उसकी ग्रीवा सुन्दर कर्णपूल के ऊपर रखी हुई आम्रमञ्जरी की लालिमा से उसके रक्तिम अधरोष्ठ बाण जैसे दिखने वाले फुलों की शोभा से उसकी सुन्दर मुस्कान तथा सर्वप्रथम प्रेषित की जानेवाली कामदूती की मधुर वाणी की मिठास से उसकी वाणी की रचना की थी। कामदेव की सम्पूर्ण सेना के सेनापति मलयानिल की सुगन्ध ही मानो उसके निःश्वास तथा जयपताका में अंकित मछली के अहंकार ही उसके दोनों नेत्रों का काम कर रहे थे —

"जयशङ्खाभिरन्यया कण्ठम्, कमनीयकर्णपूरसहकारपल्लवरागेण प्रतिबिम्बीकृतबिम्बं रदनच्छदम्, बाणापमानपुष्पलावण्येन शुचिस्मितम्, अग्रदूतिकाकलकण्ठिकाकलालापमाधुर्येण वचनजातम्, सकलसैनिकनायकमलयमारुतसौरभ्येण निःश्वास पवनम्, जयध्वजमीनदर्पेण लोचनयुगलम्।"

इसके बाद कामदेव ने अपने धनुष की लता की शोभा से उसकी सुन्दर भौंहें, अपने सुहृद् चन्द्रमा की निष्कलंक कान्ति से मुख तथा क्रीड़ामयूर की पंख रचना से उसके बालों की रचना की। तत्पश्चात् कामदेव ने सब प्रकार के मकरन्द तथा कस्तूरी से मिश्रित चन्दन जल से नहलाधुलाकर मानो उसके समस्त अङ्गों पर कर्पूर का पराग छिड़क दिया था —

"चापयष्टिश्रिया भूलते, प्रथमसुहृदः सुधाकरस्यापनीतकलङ्कया कान्त्या वदनम् (लीला-मयूरबर्हभङ्ग्या केशपाशं) च विधाय समस्त मकरन्दकस्तूरिका-सम्मितेन मलयजरसेन प्रक्षाल्य कर्पूरपरागेण सम्मृज्य निर्मितेव रराज।"

इस तरह अवन्तिसुन्दरी अपने लावण्य से अनिन्द्य सुन्दरी रति का भी मनोरंजन करने में समर्थ हो गई। एक अन्य स्थल पर उस राजकन्या के सौन्दर्य वर्णन में कवि ने मानो अपनी कलम ही तोड़ दी है। राजकन्या के सौन्दर्य को देखकर राजवाहन हतप्रभ हो जाता है और यह सोचने को विवश हो जाता है कि इस अनिन्द्य सुन्दरी के शारीरिक लावण्य का निर्माण ब्रह्मा ने भी घुणाक्षरन्याय से ही की है, नहीं तो विधाता के द्वारा ऐसी ही अन्य सुन्दरी का निर्माण किया जाता – "ललनाजनं सृजता विधात्रा नूनमेषा घुणाक्षरन्यायेन निर्मिता। नो चेदब्जभूरेवंविधो निर्माणनिपुणो यदि स्यात्तर्हि तत्समानलावण्यामन्यां तरुणीं किं न करोति।"

इस तरह हम देखते हैं कि अवन्तिसुन्दरी के सौन्दर्य वर्णन में कवि ने उत्प्रेक्षा ~~मूलक~~ कल्पना का सम्बल लेकर अपनी प्रतिभा शक्ति का पूर्णतः परिचय दिया है। निश्चय ही शृंगार वर्णन में महाकवि दण्डी सिद्धहस्त हैं।